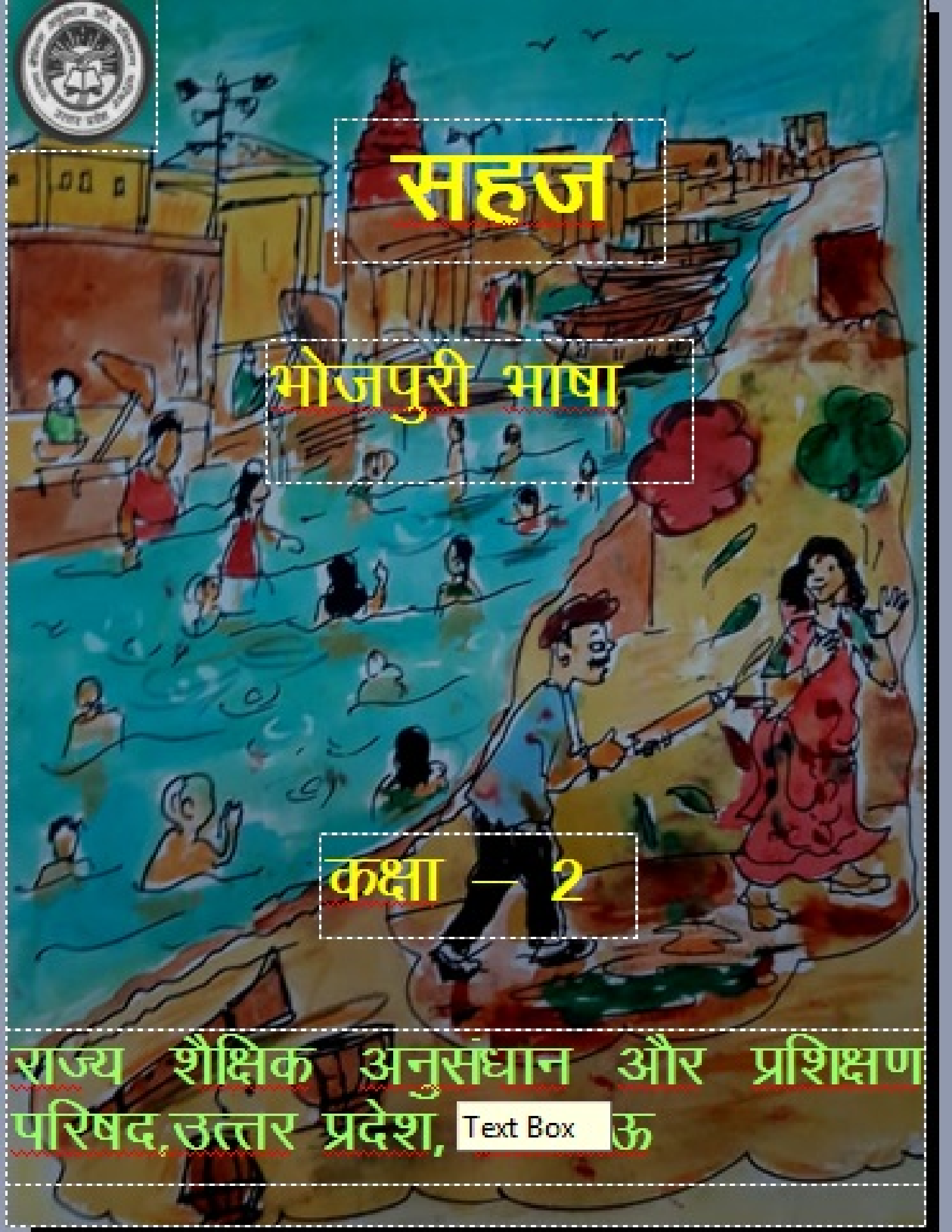

सहज

भोजपुरी भाषा

कक्षा – 2

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,उत्तर प्रदेश, Text Box ऊ

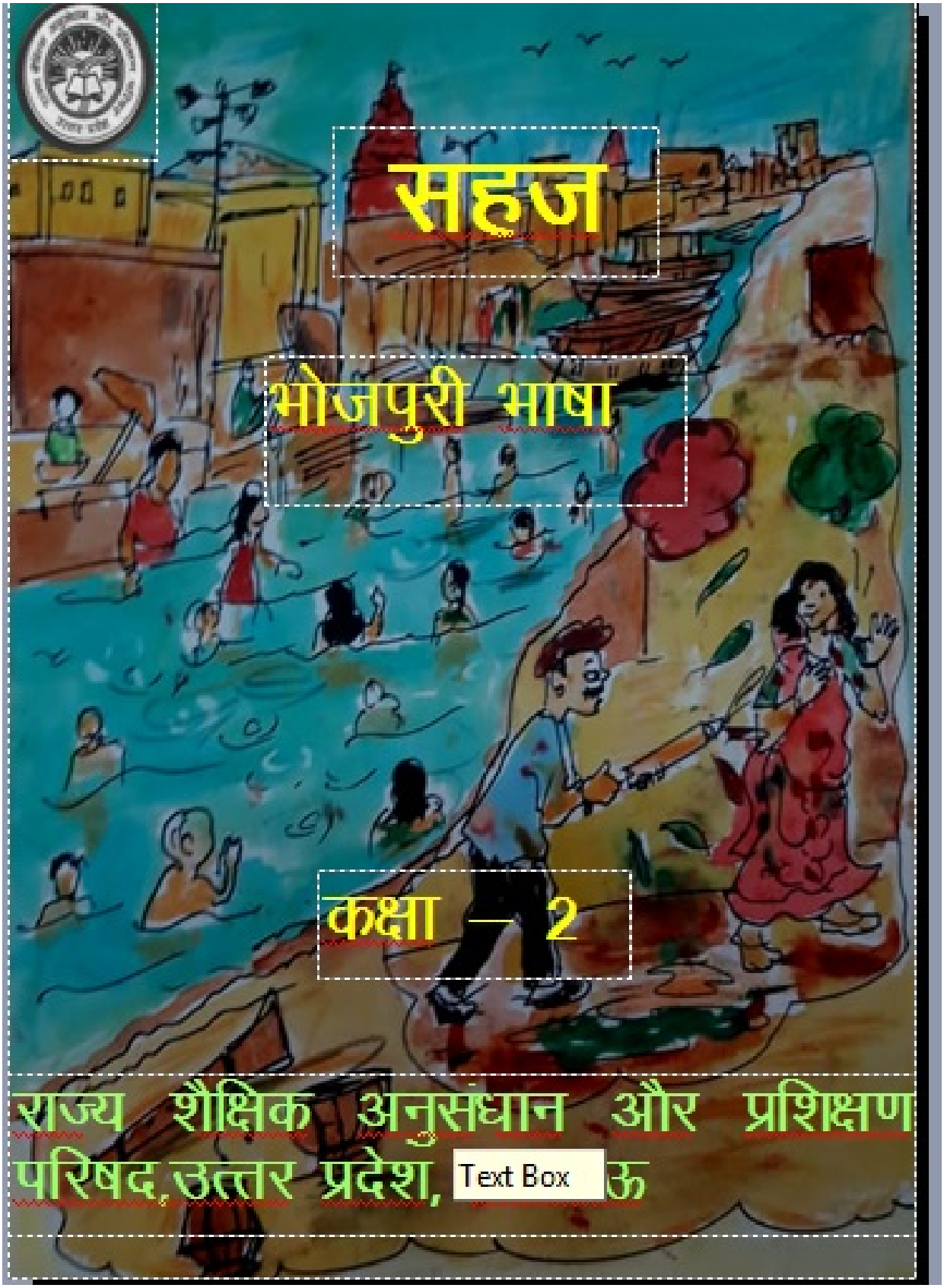

सहज

भोजपुरी भाषा

कक्षा – 2

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,उत्तर प्रदेश, Text Box ऊ

जे ही सूरज चाँद बनईलें

AHUQ7V

जेही सूरज चाँद बनईलें

जेही तारन के चमकइलें

जेही फूलनकेमह्कईलें

जेही चिड़ियन के चहकईलें

जेही सारा जगत बनईलें

हम उस भगवन के गीत गाईब

उनके प्रेम से सीस झुकाईब |

पास पड़ोस

MEGJWR

ई चित्र में देखि के बतावा कि एमे का का होत बा-

अभ्यास

बतावा –

- तोहार घर गावँ में बा के शहर में ?

- तोहरे गाँव / शहर के का नाम बा ?
- तोहार पड़ोस में के के रहेला ?
- तोहरे पडोसी का का काम करेलें ?
- तोहरे आस पास कवन कवन जानवर पालल जालें ?
- **सोचs अउर लिखा –**
- रोज कईले वाला काम...
- कब्बो कब्बो कईले वाला काम...
- घर में होए वाला काम .....
- घर के बाहरे होए वाला काम ...
- चित्र पाठ में बनल पशु पक्षी के नाम लिखा
- पढ़ा अउर नीचे दिहल गई जगह में लिखा – कवन शहर में पाईल जाला, कवनगाँव में अउर कवन दूनो में?
- बैल, गायी, घोड़ा, कार, गेंहूँकेखेत्ते, कारखाना, दुकानें, चक्की, सिनेमाघर, हल, रिक्शा, घोड़ागाड़ी, टेलीविजन, ट्रैक्टर टाली, मोबाइल फोन

बया हमार चिरईया रानी

ZB3ELM

बया हमारचिरईया रानी
तिनका लेके महल बनवली
ऊंची डालन पे लटकऊली
खेतवन से फिर दाना लईली
नदियन से पानी भर लईली
तोहकेलामे न जाए देईब
दाना से अंगना भर देईब
अउर हउदी में भर देईब हम
ठंडा ठंडा मीठा पानी |

शब्दार्थ:

- **लामे** – दूर **हऊदी** – हौज **खोता** – घोंसला **च्यूंटी** – चींटी **छेगड़ी** – बकरी **मूस** – चूहा **मधुईया** – मधुमक्खी **मेघा** – मेंढक **खरहा** – खरगोश **कछुई** – कछुआ

अभ्यास:

- **बतावा** –
- तू कवन कवन चिरई दिखले बाला?
- बया अपन खोता कईसे बनावेली ?
- चिरई लामे न जाएओह्के खातिर लईका का करे के कहत बाने ?
- लिखा, के के चिरई से बड़हन बा अउर के छोटहन बा?
- बिलार, च्यूंटी, छेगड़ी, मच्छर, मूस, माछी, गायी, भसैं, तितली, मेघा, मधुइया, कुत्ता, खरहा, मुरगी कौवा, कछुई गौरैया कम होत हई | इनके बचावे खातिर हर साल 20 मार्च के पूरी दुनिया में'विश्व गौरैया दिवस' मनावल जाला |
- तुहूँलोग गौरैया के बचा सकेला –
- कोठापर या अपने अंगना में कऊनो बरतन में रोज दाना – पानी रखि के
- खोता बनाई के अपने अंगना में या कऊनो पेड़पेलटकाई के
- .पता करा –
- कवन कवन पशु पक्षी कम होत बाने
- ई काहे कम होत बाने?
- एके बचावे के हम का कर सकेलीं ?.
- **बतावा** –
- तुहरे घर में कवन कवन रंग के चिरई आवत बाड़ी ?
- तुहरे घरे चिरई कहाँकहाँबईठेली ?
- तूं ओह्के का का खाय के देला ?
- तूं चिरई से का का बतियावल चाहेला?
- चिरई के तरह पंख होत त तूं कहाँकहाँजईता ?
- चिरई के चित्र बनावा औरे ओहमे रंग भरा –

टपका कै डर

UM3NC1

बरखा के दिन रहल | चहरों ओर पानी बरसात रहल | दादी माई के घर भीजत रहल | तनिके देर में छानि से पानी टपके लगल | दादी माई परेसान होखे लगलीं, लेकिन करतीं का ? छानि पुरान रहल | तनिके देर में पाथर पड़े लगल | बईर बराबर पाथर रहल | ऊहाँ एगो बाघ पाथर की मार से परेसान हो गईल | कूदत फांदत ऊ दादी माई के घर के लग्गे पहुचँ गईल | दादी माई भीतर भात बनावत रहलीं | चूल्हे पर पानी टपकत रहल टप–टप, टप –टप| ऊ रिसिया गईलीं अउर बोललीं – “हम टपका से जेतना डेराली ओतनाते हम बाघे से नाहीं डेरालीं |बाघसोचलस – “ई हमसे ते नाहीं डेराली, मगर टपका से डेराली | टपकाजरूर हमसे भी बड़हन के जानवर होई | अउर अईसन सोचले के बाद ही बाघ हड़बड़ा गईलअउर कपारेपे गोड़धई के भाग गईल |

शब्दार्थ

- बरखा – बरसात भीजत – भीग
- छानि – छप्पर
- लग्गे – पास
- रिसिया – झुंझला / गुस्सा
- कपार – सिर
- गोड़ – पैर
- **बतावा -**
- दादी माई काहे परेशान रहलीं?
- बाघदादी माई के घर के लग्गे काहे गईल रहल?
- बाघकाहे भाग गईल ?
- छानि कवन कवन चीज से बनत बा ?
- पाथर गिरले पर तू का का करेला ?
- तोहरे घर मे चूल्ही पर का का पकावल जाला?
- बाबूजी की माई के दादी कहल जाला | तोहन लोगन अपने बाबूजी की माई के का कहेला ?
- लिखा, बरखा में अउर कवन कवन चीज भीजत होई ?
- .ई पाठ में कवन कवन शब्द नीचे लिखल अक्षर से बनल हव,ँ उनके लिखा –
- जईसे ब से बस
- ब .....
- म .....
- प .....
- रसोई के कउनो बर्तन के चित्र बनावा –
- कहानी के आगे बढ़ावा –
- आशमा फुटबॉल खेलत रहली | ऊ गेना के ठोकर मरली | गेना बदरी काका के छत के ओर उछल के चल गईली.....

ममता के घर

7IPI1W

हमार नाम ममता ह |हमार घर मानावाला गाँव में ह | हमरे घरे के देवाल माटीके ह | देवाल पर फूस क छप्पर ह | घरवाके आरी आरी दलान बा | घरवा के पिछवड़वाघारी बनल बा| ऊंहा ँआमे के पेड़वापर झुलुआ लगल बा | ओही पर हम अउर हमार भयवा मगन झुलेलीं |

मगन अउर हम दूनो जनि उठि के भीनहीं के दतुअन करेलीं | ओकरे बाद हमन केतईयार होके इस्कूले पढ़े जालीं | इस्कूले से अईले पर हम्मन के भुखा जालीं| माई कहेलीं 'ममता, मगन! पहिलेआपन –आपन झोला खूँटी पर टांग आवा| तब हाथ मुंह धो के खाना खा|

जहिया माई के अस्पतलवा पर ढेर काम रहेला ऊ दिने खाना बाबूजी बनावेलें | हमरोज दुपहर में दाल भात, हरियर तरकारी अउर रोटी खालीं | हम बगईचा से टमाटर – मुरई औउरी गाजर भी ले आवेनी, जेके हमन धोईके खानी | मगन के लउकी के तरकारी बहुत नीक लगेला |

बाबूजी खेत्ते में काम करत हवें | सांझी के खेत्ते से लवट के बाबूजी बैलन के खूंटा से बाधँ देलें| अउरओके छांटी– पानी करेलें | माई गायी के दूध दुहेलीं |

बिजली जाय पर मगन लालटेन जला देला | घर में अजोर हो जाला | मगन अउर हम साथ साथ बईठ केपढ़ेनी | राति केखाना खईले के बाद दादी माई हमन के खीसा सुनावेली| खीसा सुनत सुनत हम्मन के सूत जानी |

शब्दार्थ

- घारी – गौशाला आरी आरी – चारों तरफसांझी – शाम छांटी पानी – चारा खिलाना अजोर – उजाला खीसा – कहानी सूत – सो जाना

अभ्यास

- मगनअउर ममता इस्कूल जाए से पहिले का का करेलें?
- बाबूजी खाना कब बनावेने ?
- तोहरे घर के देवाल कवन कवन चीज़ से बनल बा ?
- तोहरे घरे के के रहेला ?
- तोहरे घर में कवन कवन जानवर पालल जालें?
- तोहरे घर के आस पास कवन कवन पेड़ पौधा लगल बा ?
- ममता के बाबूजी, अम्मा की खाना बनाये में मदद करेलें | तूँ घर के कवन कवन काम में मदद करेला ?
- अम्मा के.....बाबूजी के.....बहिनी के .....भैया के .....
- **लिखा –**
- क) अईसन जानवर के नाम जे दूध देला
- ख) अईसन चीज के नाम जेसे अजोर होला
- ग) खेती में काम आये वाली चीज के नाम

मेला

WBX7FN

-

श्यामा शिवपुर के मेला देखे जात रहली | ऊ नया फराक पहिनले रहली |

श्यामा – अम्मा अम्मा, हालि हालिचला, नाहीं त अब्दुल चाचा के टलिया में जगही नाहीं मिली|

अम्मा – तू खाना त खा ला |

श्यामा – नाहीं अम्मा, हमके भूख नहीं लगल बा | बाबूजी भी अबेर करत हवैं| ऊ त अबहीं ले नया कपड़ा भी नाहीं पहिनले बाने |

बाबूजी – तोहन लोगन चाचा के टाली में जा के बईठा, हम भईंस के छाटँी डाल केआवत हईं |

टाली में ढेर जने बईठल रहलें| श्यामा, ओकर अम्मा अउर बाबूजी भी बईठ गईने | टाली चले लगल | तब्बे एगो हवाई जहाज शूंsss के अवाज करत निकलल | लईकाख़ुशी से चिल्लाये लगने – हवाई जहाज, हवाई जहाज !

तनिके देर में मेला नगीचे आ गईल | मीनू के बाबा लईका के समझावे लगलें – मेलामेंसबजनी एक दूसरे की अंगुली पकड़ले रहिया, नाहीं ते हेरा जईबा |

मेला में तरह तरह के दुकान रहल | खेलउना के दुकान देख के सज्जी लईके रुक गईलें | मीनू के अम्मा बोललीं – पहिलेमेलाघूमा, फिर खेलउना खरिदाई |सब लोग मिठाई के दुकान पर गईलें | ऊँहां ऊ लोग जलेबी अउर बरफी खईने |

मेला में सरकस लगल रहल| लईके सरकस देखने, फिर ऊ लोग झूला झूललें | एक ओर जादूगर जादू देखावत रहल |

श्यामा चाभी वाला जहाज खरिदली | मीनू गाड़ी अउर अम्बर जोकर खरिदलें | श्यामा के अम्मा बक्सा खरिदली | बाबूजी बैलन खातिर घंटी खरिदने | मेला देखले के बाद सब लोग टाली से वापस घरे चल दिहने | नेहा बोलली – रोज मेला देखे के मिलत त केतना मजा आवत |

अम्बर बोलल – रोज मिठाई, रोज समोसा – अहा!

शब्दार्थ:

हालि हालि – जल्दी जल्दी

टलिया – ट्राली

अबेर – देर

नगीचे – पास

सज्जी – सब

अभ्यास

1. उत्तर लिखा –

क) श्यामा अउरओह्के संगतिया का का देखलें अउर खरिदलें ?

ख) मीनू के बाबा लईकन के का समझईलें ?

2. बतावा –

क) तोहरे आस पास में मेला कहाँ कहाँ लगेला ?

ख) कातूँ कब्बो मेला देखे गईल हवा ? राही अउर मेला में का का देखला ?

ग) मेला में कवन कवन दुकान रहेलीं ?

घ) तोहके मेला में दुकान लगावे के होए त कवन चीज के दूकान लगईबा ?

कबूतर

JFBCQS

भोलाभाला बहुत कबूतर,
हमन के पललीं बहुत कबूतर
कुछ उज्जर कुछ लाल कबूतर
चललें छम छम चाल कबूतर
कुछ नीला बगैंनी कबूतर
पहिने हैपैजनी कबूतर |
करेने हमसे प्यार कबूतर
करेने बड़ा दुलार कबूतर
आजा अंगुरी परझूम कबूतर
लेईं तोहार मुंह चूम कबूतर
रखत रेशम बाल कबूतर
चलत रुनझुन चाल कबूतर
गुटर गुटर गूं बोल कबूतर
देलेंमिसरी घोल कबूतर |

अभ्यास

- 1. उत्तर द–
- क) कबूतर कवन कवन रंग के होलें ?
- ख) कबूतर कईसे बोलेलें ?
- 2. इनके बोली बोलके बतावा –
- कबूतर..... कोयल..... गायी..... घोड़ा..... छेगड़ी ..... कउवा .....
- मुरगा..... बिलार.....
- 3. शब्द के सही क्रम में रखा अउर कविता लिखा–
- • कबूतर भाला बहुत भोला .....
- • ढेर पाले कबूतर हमन के
- .....
- • कुछ कबूतर लाल उज्जर कुछ .....
- • चाल छम छम चलेलें कबूतर .....
- 4. नीचे दिहलें शब्द के विलोम शब्द लिखा –
- दिन..... भीतर.....
- बड़हन.....कम.....
- आपन पसंद के कउनो चिरई के चित्र बनाके रंग भरा |

नाव चलल

मेघा, चूजा, मूस, च्यूंटी अउर गोबड़ईलासंगतिया रहलें| एक दिन चूजा बोलल, “चलीं, हम्मन के घूमे चलेके अउर दुनिया देखे के |”

च्यूंटी कहली, ‘ह, ह दुनिया बहुत बड़हन बा | हम्मन के नवा नवा चीज देखल जाई |

सब चल दिहने | चलत चलत एगो झील के किनारे पहुँचने | अब हमनी के आगे कईसे जाईब – गोबड़ईला पूछलस |

मेघा बोलल, “हम पंवरके झील पार कर लेइब|”

“हम्मन के त पंवरल नाहीं आवेला| हम्मन के का करब ?” चूजा, मूस, च्यूंटी अउर गोबड़ईला बोललें |

मेघा हसे लगल | बोलल“टर्र, टर्र, टर्र | तोहन लोगन के पंवरल नाहीं आवेला त तू आपन आपन घरे लऊट जा|

ईकही के मेघा फिर खूब जोर के हंसलस अउर पानी में कूद गईल |

ई बतिया उन चरहून के बहुत ख़राब लगल | ऊ लोगझील पार करे के उपाय सोचे लगलें |

आखिर ऊ लोगएगो उपाय खोज लिहलें |

मूस दऊर के अखरोट के छिलका ले आईल | चूजा एगो पत्ता ले आईल | च्यूंटी एगो सरकंडा उठा ले आईल |

गोबड़ईला ढेर देर के बाद आईल | ऊ अपने साथ एगो बड़हन के धागा ले आईल |

चारों मिलिके नाव बनउलें | ऊ लोग सरकंडा के अखरोट के छिलके में फंसा दिहलें | ओहमें धागा से पट्टी के पाल की तरह बाधँ दिहलें | तनिके देर में एगो सुन्दर नाव तईयार हो गईल | च्यूंटी कहली “अब हम्मन झील के पार कर लेब | ऊ लोग आपन नैया के पानी में उतरलें अउर ओहपर बईठ गईलें | मूस नाव चलाये लगल |

धीरे धीरे उनकर नाव आगे बढ़ गईली |

शब्दार्थ:

संगतिया– मित्र

मेघा – मेंढक

च्यूंटी – चींटी

मूस – चूहा

गोबड़ईला– गुबडैला

पंवरल – तैरना

अभ्यास

1. बतावा –

क) सब संगतिया का सोचलें?

ख) मेघा का कईलस ?

ग) मूस, च्यूंटी, चूजाअउरी गोबड़ईला झील कईसे पार कईलें ?

2. लिखा, नाव बनावे खातिर का का ले आइल बाने –

मूस.....

चूजा.....

च्यूंटी.....

गोबड़ईला.....

3. नीचे लिखल शब्द के विलोम लिखा –

लामे बुराअगवां हसाँ

....

.....

4. का तुहूँ लोगन कब्बो मिलजुल के कउनो काम कईले बाला? कईसे कईला ? अपने कॉपी में लिखा |

5. दिहलगईल शब्द से अपने वाक्य बनावा –

जईसे, जोर जोर – मेघा जोर जोर से हसँै लगल |

धीरे – धीरे.....

गिरत - गिरत .....

चाँद

L55VUF

गरमी के रात रहल | साबिर अउर सना आपन अब्बू अउर अम्मी के साथ कोठा पर बईठल रहलें| आकाश में चाँद लऊकत रहल| गोल गोल थरिया जईसन | साबिर बहुत खुश रहलें |

ऊ सना से कहलें "देखा दीदी, चाँद कईसे चमक रहल बा! ऊँहा ँके रहत होई ?

सना बोलली, "अबहीं ले चाँद पर जीये खातिर ज़रूरी हवा, पानी, अउर खाना नाहीं मिलेला | एही से ऊँहा ँकेहू नाहीं रहेला| हो सकेला कि कल ई हो जाये | साबिर अम्मी से कहलें, " चाँद के बारे में कुछ बतावा न |"

अम्मी बोलली, "चाँद हम्मन के धरती के चारों ओर चक्कर लगावेला | धरती से कुछ जने राकेट में बईठ केचाँद पर गईने |ऊँहा ँपहुँचले पर ऊ ख़ुशी से कूदे लगलें त बहुत ऊंचा उछल गईने | चाँद पर बड़हन बड़हनचट्टान अउर गड़हा बा | ऊ लोग ऊँहा ँसे माटी अउर चट्टान के नमूना धरती पर ले के अईलें |"

साबिरपुछलें, "चाँद पर एतना चमक कहा ँसे आवेला ? अब्बू बतईलें, "चाँद के सूरज से प्रकाश मिलेला | हम्मन के धरती के भी सूरज से प्रकाश मिलेला |"

"सूरज के रोशनी कऊन देला?" साबिर फिर पुछलें|

सूरज एगो तारा ह | तारा के आपन रोशनी होला| आकाश में ई जवन तारा टिमटिमात हव ँ ऊ सब हम्मन के सूरज के तरह हव ँ|ऊ सब में कुछ त सूरज से भी बड़हन हव ँ| ई हमसे बहुत दूर हव ँ| एही से छोटहन छोटहन दिखाई देलें" अब्बू बतईने |

अम्मी कहली, "अगला महीना ईद बा | तबतोहन लोगन के चाँद के कहानी सुनाइब |"

शब्दार्थ

शब्दार्थ

कोठा – छत

लऊकत – दिखाई देना

बड़हन – बड़ी

छोटहन – छोटे

अभ्यास

1. उत्तर द–

क) चाँद पर केहू काहे नाहीं रहेला ?

ख) हम्मन के धरती अउर चाँद के उजाला कहाँसे मिलेला ?

2. राति केचाँद निकलले परओह्के धियान से देखा | आपन किताब में निशान लगा के बतावा कि ऊ कउने चित्र जईसन दिखाई देला ?

3. बतावा –

क) सांझ भईले पर चिरई का करेलीं ? तूँका करेला ?

ख) सूरज के नाहीं निकलले पर का का नाहीं होई?

4. बोलकर लिखा –

चाँद.....रंग.....माई.....
मंजन.....गाँव.....ठंडा.....

5. चाँदपर कऊनो कविता कक्षा में सुनावा |

नंदू कै जुखाम

RMXG62

बहुत जुखाम भईल नंदू के
एक दिन ऊ एतना छीकलें
एतना छीकलें एतना छीकलें
एतना छीकलें एतना छीकलें
सब पत्ता गिर गईल पेड़ के
धोखा भईल उन्हेंआन्ही के

शब्दार्थ

छीकलें – छींका

आन्ही – आंधी

अभ्यास

1. **बतावा** –

- तूँ पत्ता के कब कब गिरत देखले बाला ?
- जब तोहके जुखाम होला तब का होला ?

- आन्ही आवे पर का - का होला ?

2. **नीचे दिहल गई शब्द के सही जगह पर भरा –**

नंदू, लईका,छींक, जुखाम, पेड़, तेज, पत्ता, आन्ही,धोखा

एगो..... रहल| ओकर नाम ..... रहल| एक बार नंदू के बहुत..... भईल | ओह्के..... आवे लगल | ऊ एतना ..... के छीकले कि ..... से सब ..... गिर गईल | पत्ता के ..... भईल कि ..... आ गईल बा |

3. **कहानी पूरा करा –**

एगो रहल ..... | ऊ बहुत..... रहल| ओकर नाम पड़ गईल 'आक् छीं|' एक दिन ..... गईल दुकान में | ..... पुछलें का चाही ? ..... कईला 'आक् छीं|' दूकानदार कहनें इहाँ 'आक् छीं' नाहीं मिलेला | एहाँ मिलेला..... |

4. का तुहूँ नंदू के जईसन छींकेला ? छींकत समय का करे के चाहीं ?

जगतपुर गाँव के लइके

4JJAUX

ई जगतपुरगावँहवै | गावँ में जगह जगह कचड़ा अउर गन्दगी रहल | लईके खेलल चाहत रहने पर कहा ँखेलतै | कउनो जगह नाहीं रहल | इस्कूल जाए के रास्ता भी कचड़ा से भरल रहल |

एक दिन लईके मैदान में जमा भईलें| ऊ लोग सोचने कि ई गन्दगी दूर हो जात त केतना अच्छा होत ?

"हमपरी से कहब कि राति के आके जादू के छड़ी से हमार गावँ के साफ सुथरा अउर सुन्दर बना द |" लोकेश कहलें |

ई सुनकर सब लईके हँसे लगने | सरिता बोलली, "कहीं परी भी गावँ के सफाई करेली ? हमनी के ही कुछ करे के पड़ी |"

सब लईके मिलिके एगो उपाय बनउने | दूसरे दिन भीनहीं के लईका लोग गावँ में फेरी निकललें | उनके हाथ में तख्ती अउर कुदार रहल |ऊ लोग नारा लगउने–

हमार गावँ कईसन होई
साफ़ सुथरा सुन्दर होई
हरा भरा विद्यालय होई
घर घर में शौचालय होई
नाली के साफ़ रखा
रास्ता के साफ़ रखा |

एकरे बाद लईके इस्कूल के रास्ता पर पहुचँलें| ऊ लोग बेलचा से कचड़ा हटावल शुरू कईलें | छोटहनछोटहन कुदार से नाली बना दिहलें | रुकल पानी नाली में चल गईल | तब्बे गावँ के परधान अउर गावँ के बहुत लोग आ गईने | लईकन के काम करत देखि के

ऊ लोग भी सफाई में लग गईने | सबजनि मिलिके खेल के मैदान के भी साफ़ सुथरा कर दिहलें | गड़हा में माटी भर के पाट दिहने|

गावँ के परधान जी कहलें, “लईके तूँलोग बहुत बढ़िया काम कईले बाला| हम सब जनि मिलिके गावँ के स्वच्छ अउर सुन्दर बनावल जाई | पेड़ पौधा भी लगावल जाई | तोहन लोगन मन लगा के पढ़िया अउर खेलिहा |

शब्दार्थ

कचड़ा – कीचड़

फेरी – प्रभात फेरी

कुदार – फावड़ा

परधान – प्रधान

अभ्यास

- जगतपुर गावँ के लईके काहे दुखी रहलें ?
- लईके का उपाय बनउने ?
- लईके कवनकवन नारा लगउने ?
- तोहरे गावँ में अईसन परेशानी आवे त तूँका करबा ?

- **बतावा** –

अपने इस्कूल के साफ़ अउर सुन्दर बनावे के खातिर तू अउर तोहार साथी का का कर सकेला?

किसान के होशियारी

GG65JT

एगो किसान आपन खेत जोतत रहल| अचानक कहीं से भालू आ गईल | भालू किसान के मारे लपकल | किसान कहला, हमके काहे मारत हव ? फसल आवे द जवन कहबा तवन खियाईब| भालू कहलस, “जमीन के ऊपर के फसल हमार अउर नीचे के तुहार रही |

किसान आलू बो दिहलस | फसल आईल त भालू के खाय के पत्ता मिलल | भालू रिसिया के रह गईल | अगली बार भालू कहलस, “देखाए बारी जमीन के नीचे के फसल हमार अउर ऊपर के तुहार होई ?

किसान गेंहूं बो दिहलस | जब फसल तईयार भईल त किसान के चमकीला गेंहूँ मिलल | भालू के मिलल खाली जड़ अउर भूसा | भालू खिसिया के रह गईल |

ए बारी भालू किसान के मजा चखावे के चाहत रहल | ऊ किसान से कहलस, “जमीन के सबसे ऊपर अउर सबसे नीचे के फसल हमार |” किसान मान गईल |

ए बारी किसान ऊंख बो दिहलस | फसल आईल त भालू के मिलल पत्ता अउर जड़ | भालू के सिर चकरा गईल|

शब्दार्थ :

जोतत – जोत

लपकल – झपटा

रिसिया – झुंझलाना/ गुस्सा होना

खिसिया – खीझ

अभ्यास

1. बतावा –

क) किसान भालू से आपन जान कईसे बचउलस ?

ख) भालू कब खिसिया के रह गईल ?

ग) तीसरी बार भालू का शर्त रखलस ?

2. लिखा, कउने मौसम में फसल बोवल जाला –

क) गेंहूँ के .....

ख) ऊंख के .....

ग) आलू के .....

घ) धान के .....

3. का खाईल नीक लागेला –

क) भालू के .....

ख) तोता के .....

ग) गायी के.....

घ) बन्दर के.....

ङ) बिल्ली के .....

च) तोहके.....

4. खाय वाली कवन कवन चीजजमीन के नीचे पैदा होवेली ?

5. सोचा अउर लिखा – अगले बारी भालू कवन शर्त लगवले होई ?

हम के हईं

TCRZ9P

हम आसमान में छावल बदरा में रहेलीं | उहाँसे बरस के धरती पर चल आई ला | तूँ कागज के नाव बनाके हमरा में पंवरावेला |

बतावा हम के हईं ?

हमन के सोता से निकलेनी | पोखरा अउर झील में जमा हो जानि | नदी में बहेनी| बही के समंदर में पहुंचेनी| उहाँसे भाप बनिके उड़ जानि अउर बादल बन के बरस जानि |

बतावा हम के हईं ?

हम नलका में आवेनी | इनारे से निकालल जानि | बांध में जमा हो जानि |

बतावा हम के हईं ?

तूँहमसे ही हाथ मुंह धोवेला, नहाला, कपड़ा फींचेला | पियास लगले पर हमके पीये ला | हमही से तूँखाना बनावेला |

सब पशु पक्षी हमके पीयेलें| किसान हमही से पेड़ पौधा सींचेलें | मछरियों हमहीं में रहेला |

बतावा हम के हईं ?

हमार जरूरत सब केहू के बा | अगर हम साफ़ रहब त तूँभी स्वस्थ रहेला |

केहू हमके गन्दा कई देई त तूहूँबेमार हो जईबा | एहिसे हमके हरदम साफ़ रखिहा | हमके जेतनाजरूरी हो ओतना ही खर्च करिहा लोगन | तब्बे तूँस्वस्थ अउर खुश रहबा

अब त तूँजान गईल होइबा किहम के हईं ?

तनि हमार नाम बतावा ?

शब्दार्थ:

पोखरा – तालाब

इनारे – कुआँ

फींचेला – कपड़े धोना

बेमार – बीमार

अभ्यास

1. **उत्तर लिखा** –

हमके पानी कहाँ कहाँ से मिलेला ?

2. **चार गो अईसन शब्द लिखा जेके बाद में 'नी' आवेला** – जईसे पानी, कहानी .....

3. पानी के बारे में तीन गो वाक्य आपन काँपी में लिखा |

4. तूँ पानी के बर्बादी कईसे रोक सकेला ?

इस्कूल में.....

घर में .....

अगल – बगल.....

कोहड़ा जी के चलल बरात

69DTYK

कोहड़ा जी के चलल बरात

भईल बतासन के बरसात

भांटा केगाड़ी के उपरा

बईठने कोहड़ा राजा

शलजम अउर पियाज मिलके

खूब बजईने बाजा|

मेथी, पालक, भिन्डी, तोरई,

टिंडा, मुरई, गाजर

बन के बाराती नाचत रहलें

आलू, मटर, टमाटर|

कोहड़ा जी हंसत मुस्कात

लऊकी दुल्हन लईने

कटहर अउर करईली जी खूब

चाट पकऊड़ीखईने

भीनहीं पता चलल ई बात

सपना देखले रहनी ई रात |

शब्दार्थ

कोहड़ा– कद्दू

भांटा – बगैंन

उपरा – ऊपर

मुरई – मूली

करईली – करेला

भीनहीं – सुबह

अभ्यास

1. बतावा

क) जब बरात जावेली तब का का होवेला ?

ख) बरात में कवन कवन बाजा बाजेला ?

ग) का तुहूँ पिछली रात कउनो सपना देखले रहला ? का देखला ?

2. दिहल गईल शब्दन के सही जगह पर भरा –

(बरात, बतासन, कोहड़ा, पियाज, शलजम, भांटा)

एक गो रहल ..... | ओकर..... चलल | ओकरी बरात में ..... के बरसात भईल | ..... के गाड़ी के ऊपरा ..... राजा बईठने | ..... अउर ..... मिलिके बाजा बजऊने |

3. तूँका का करेला ? ओपर गोला लगावा –

नाचेलीं, हंसेलीं, रोवेलीं, भौंकेली, लिखेलीं, खोंखेली, चह्चहावेलीं, छीकेलीं, खेलेलीं, पढेलीं, गावेलीं, उड़ेलीं, पंवरेलीं, नहावेलीं |

4. तूँभी केहू के बरात में गईल होबा | बतावा तूँ

क) केकरे बरात में गईल रहला ?

ख) केकरे केकरे साथ नचले रहला ?

ग) बरात में अउर का का कईला ?

5. लिखा – तोहके कवन कवन तरकारी खाए में नीक लागेला ?

गाँव

I5ZNNG

प्रकाश आपन बाबा के संगे बस अड्डा पर खड़ा रहल| दिनेश चाचा अउर उनके लईका कृष्ण शहर से आये वाली बस से उतरलें | दूनोंजनि बाबाजी के परणाम अउर गोड़धईलें| प्रकाश चाचाजी के पावँ छूके कृष्ण के गला लगा लिहलें | बाबाजी कहलें, “दिनेश, तोहारफोन आईल रहल कार ले आईल बानी |”

सब कार में बईठ के गावँ ओर चल दिहलें | प्रकाश कृष्ण से पुछलें, “चाचाजीशहर में कऊन काम करेलें ?

कृष्ण बतवलें, “बाबूजी ऊँहां कपड़ा के कारखाना में काम करेलें | तूँ बतावा, ताऊजी इहाँ गावँ में का का करेलें ?

“हम्मनत खेती करेलीं | बाबूजीखेत्ते में फसल अउर साग सब्जी उगावेलें |” प्रकाश बतवलन |

कृष्ण – का इहाँ के भी सड़क पक्की हवे?

बाबाजी – हाँ, अब इहाँ खडंजा अउर पक्की सड़क भी हवे|

सब बात करत करत घरे आ गईलें | तब्बे भौं भौं के आवाज करत मोती आ गईला | ऊ सबके सूंघलस, फिर चुपचाप आपन पूंछ हिलावे लगल | प्रकाश अउर कृष्ण बहुत ढेर बात कईलें | सबकेहू बईठ केताजा माठा पियलें |

दूसरा दिने कृष्ण अउर प्रकाश खेत्ते की तरफ घूमे गईले |

कृष्ण देखलें कि बिजली से चले वाला पंप से खेत्ते के सिंचाई होत रहल| कुछ खाली खेत में टट्टर से जोताई होत रहल |

कृष्ण – प्रकाश! ई पीयर पीयर सरसों का फूल केतना सुन्दर लागत हवे!

प्रकाश – हाँ| आजकल खेत्ते में गेंहूँ, ऊंख, मटर, चना अउर अरहर भी हवे| कहीं कहीं गोभी भी लगावल गईल हवें |

एक ओर गन्ना के पेराई होत रहे| दूनों मटर के फली खईलें अउर ऊंख के ताजा रस पियलें |

सांझ होत रहल | सबकेसंगे गायी अउर भईंस भी घरे लउटत रहलें| कृष्णअउर प्रकाश भी घरे लऊट अईने

अभ्यास

- शब्दार्थ:
- परणाम – प्रणाम
- सूंघलस– सूंघा
- माठा – मट्ठा
- टट्टर – ट्रैक्टर
- पीयर – पीले

- गोड़धईलें – चरण स्पर्श किये
- अभ्यास
- 1. बतावा –
- क) तोहरे गावँ में सड़क कईसन हवैं?
- ख) गऊवां में कृष्ण खेती करे की कवन कवन मशीन देखलस ?
- ग) तूँ खेत्ते में कवन कवन फसल देखले बाला ?
- 2. आपन माई – बाबूजी सेपूछकर लिखा –
- क) रोटी कवन कवन अनाज के बनेली?
- ख) हरिहरसब्जी कवन कवन होलीं ?
- ग) खेतन के सिंचाई कवन कवन साधन से होवेली?
- घ) भेली कईसे कईसे बनेली ?

हमार मददगार

NNS8Z3

दू बैलन की जोड़ी लेके,

खेती कईल उनकर काम,

जाड़ा, गरमी, बरखा सहेला

कब्बो नाहीं ऊ करे आराम

डाकिया

कपारे पे टोपी एगो लगवले

कान्हे पे थईला लटकवले,

खाकी वर्दीमें मुस्काला,

मनीआर्डर, चिट्ठी ले आवेला

कुम्हार

माटी के ऊ चीज बनावें

नीक नीक ओह्के सजावें

चांक घुमाके करेला काम

बोला लईके ओकर नाम |

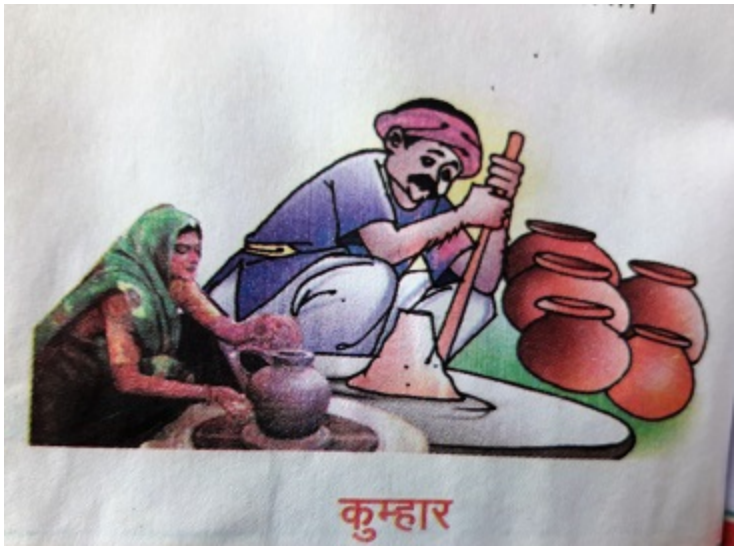

हलवाई

लड्डूपेड़ा रसमलाई

दही जलेबी बालूशाही

खोआ चिन्नी दूध मिलाके

रोज बनावें खूब मिठाई

बढ़ई

कुरसी, मेज, चऊकी, दरवाजा

मचिया, खटियासभी बनाता

काम करे फिर लेहला दाम

बोला लईका ओकर नाम

शब्दार्थ:

कपारे – सिर **कान्हे** – कंधे **खोंखी** – खांसी

अभ्यास

- एमे से जवन चीज तोहरे घरे बा, ओपर घेरा लगावा –

  कुरता तख्ता घड़ा कुरसी कुदार हंसुआ टेलीफोन डलुआ

  मिठाई खुरपी रेलगाड़ी खटिया कड़ाही हवाई जहाज हल हांडी

- जवन चीज पर घेरा लगईले बाला, ओकरे नाम के सामने लिखा कि उनके के बनावेला?
- ऊ इन चीजों के बनउले में जवन औजार का प्रयोग करत हव ैंउनके नाम आपन कापँी में लिखा |

परी

DGZXDU

जाड़ा के दिन रहल | आसमान में एगो परी उड़त रहल | उड़त उड़त ऊ नीचे देखली | धरती पर कई रंग के फूल खिलल रहलें| परी फूलन के बीच आ गईली | ऊहाँ ओके एगो तितली मिलल | एगो मधुइया छत्ता बनावत रहली| परी ओसे कहली, “मधु, आवा खेलीं|”

मधुईया कहली, “अबहिन हम छत्ता बनावत हईं|”

परी बोलली, पहिले खेला, फिर छत्ता बना लिहा |”

मधुइया बोलली, “नाहीं, नाहीं| जाड़ा के दिन हवैं| बरफ पड़े वाली हवे, ओसे पहिले हमके आपन छत्ता बनावे के बा |”

परी हंसली अउर कहली, “अगर हम तोहार छत्ता जल्दी से बनवा दीं तब तू हमरे साथ खेलबू ?”

“हाँ” मधु कहली | परी आपन सखी मधु के बोलईली | देखत देखत ऊंहाँ बहुर ढेर मधु आ गईलीं | हजारों हजार मधु | ऊ सब छत्ता बना के ओमे शहद डाले लगलीं | जल्दीसे घर बनके तईयार हो गईल |

सब बहुत खुश भईलें | परी अउर मधुइया खुश हो के नाचे लगलीं | तितली भी उड़त उड़त उनके साथ नाचे लगली |

अभ्यास

- **उत्तर लिखा-**
- मधु परी के साथ खेलले के काहे मना कईली ?
- परी का कईली ?
- मधु शहद कहा ँसे जमा करेली ?
- सोचा अउर लिखा –
- मधु के कवन कवन गुण हमन में होए के चाहीं ?
- बतावा –
- सरदी से बचे खातिर तू ँका का करेला ?
- शहद खाए में कईसन लागेला?
- फूल कवन कवन रंग के होलें ?
- रंग बिरंगी तितली के चित्र बनावा|

हमसे सब केहू कहेला

3A8LSL

नाहीं सूरज से कहेला केहू
घाम इहा ँपर मत फैलईहा
केहू नाहीं चाँद से कहेला
उठा चांदनी के ले आवा |
केहू नाहीं हवा से कहेला
खबरदार जे अन्दर अईबा,
बादर से कहे कब केहू
काहेजलधार इहा ँबरसईला |
फिरकाहे हमसे भैया कहेने
इहा ँन आवा, भाग जा
माई कहेली घर भर में,
खेल खेलवना मत फैलईहा |
बाबूजीकहेने बाहर खेला
ख़बरदार जे अन्दर अईला
हमनी पे सबके बस चलेला
जे चाही ऊ हमकेडांटेला |

अभ्यास

सोचा अउर बतावा –

क) सूरज से केहू कुछ काहे नाहीं कहेला ?

ख) माई घरे में खेल खेलवना फईलावे से काहे मना करेली ?

ग) तोहके घर में –

- के के टोकेला ?
- कवन कवन बात पे टोकेला ?
- टोकले पर तूँका का करेला ?

पोंछ हिलावे वाला भेड़िया

F6UGHH

एगोभेड़िया गड़हा में गिर गईल | ऊ ढेर कोशिश कईलस पर गड़हासे बहरे नाहीं निकल पवलस|

ओहर से एगो मेमना आवत रहल | भेड़िया ओही से गिड़गिड़ाके कहलस, “मित्र, हमके ऊपर निकाल दा |

मेमना पुछलस, “अरे! तूँके हउवा ? इहाँगड़हा में कईसे गिर गईला ?”

भेड़िया कहलस, “हम कुक्कुर हईं, एगो मुरगा के बचावत बचावत हम खुदहीं इहाँगिर गईलीं |”

मेमना रहल त छोटहन के, लेकिन रहे बहुत होशियार |ओकर माई खतरनाक जानवर के बारे में खूब समझवले रहलीं| ओके भेड़िया के बात पर विश्वास नाहीं भईल |

मेमना बोलल, “लेकिन तूँत भेड़िया जईसन लागत हऊ|

भेड़िया भी कम चालाक नाहीं रहल | ऊ कहलस, “हमार पोंछ देखा, कुत्ता के जईसन हिलत बा कि नाहीं?”ई कहि के भेड़िया आपन पोंछ हिलाके मेमना के दिखावे लगल, फिर

कहलस, “अब जल्दी से हमके बहरे निकालदा, हम कुक्कुर हईं |”

मेमना कहलस, “लेकिन तोहार मुंह त भेड़िया के ही तरह बा, हमके सोचे दा |” भेड़िया के ई बात पे गुस्सा आ गईल | ऊ आपन बड़हनके मुंह फईलाके मेमना के डांटलस | “बेवकूफ! एमन सोचे वाला कवन बात बा ?

ओकरबड़हन बड़हन नुकीला दांत देखि के मेमना अब सही में समझ गईल कि ई भेड़िया ही हवे |

ऊ कहलस, हव त तूँ भेड़िया, पर धोखा देवे के खातिर कुक्कुर के जईसन पोंछ हिला सकेला | ई कहत मेमना आपन घर की ओर तेजी से भाग गईल |

शब्दार्थ:

कुक्कुर – कुत्ता

गड़हा – गड्ढा

पोंछ – पूँछ

अभ्यास

1. बतावा –

क) भेड़िया गड़हा में कईसे गिरल होई?

ख) मेमनाभेड़िया के बहरे काहे नाहीं निकललस ?

ग) मेमना कईसे जान गईल कि गड़हा में भेड़िया हवे ?

2. ई जानवर के छोट बच्चा के का कहल जाला ?

भेड़ ..... गायी .....

कुक्कुर ..... भईंस.....

3. ‘म’ अउर ‘भ’ से शुरू होए वाले शब्द के पूरा करा –

म..... मि.....

मु.....

भ..... भा.....

भे.....

राष्ट्रीय चिन्ह

हर देस के आपन पहिचान होला | ई पहिचान कउनो निशान सेकईल जाली| ई निशानन के राष्ट्रीय निशान कहल जाला|

आवा इनके जानीं -

राष्ट्रीय जानवर–बाघ

राष्ट्रीय चिरई–मोर

राष्ट्रीय चिन्ह–अशोक की लाट

राष्ट्रीय फूल–कमल

राष्ट्रगान-

जन- गण -मन अधिनायक ,जय हे
भारत –भाग्य विधाता
पंजाब –सिंध –गुजरात –मराठा –
द्राविण-उत्कल बंग
विंध्य-हिमाचल –यमुना –गंगा
उच्छल –जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे ,
तव शुभ आशिष मांगे ,
गाहे तव जय गाथा
जन –गण-मंगल दायक जय हे
भारत –भाग्य विधाता
जय हे ,जय हे ,जय हे ,
जय जय जय जय हे

अभ्यास

- आपन राष्ट्रीय झंडा के का कहल जाला ?
- हमरे राष्ट्रीय गानके, केलिखले बा ?
- तोहरे इस्कूले में झंडा कहिया फहरावल जाला ?

खाली जगही भरा

- राष्ट्रीय झंडा में सबसे उपरा के पट्टी.....रंग के होत बा |
- बीचके पट्टी .....रंग के होत बा |
- अउर सबसे नीचे .....रंग के पट्टी होत बा|
- हमार राष्ट्रीय चिरई .....बा|
- हमार राष्ट्रीय जानवर .....बा |
- हमार राष्ट्रीय फूल .....बा|

संरक्षण: श्री संजय सिन्हा, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0 ,लखनऊ।

अवधारणा एवं निर्देशन: डॉ.अजय कुमार सिंह, संयुक्त शिक्षा निदेशक (एस0एस0ए0), राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0 लखनऊ।

समन्वय व समीक्षा:

- श्रीमती दीपा तिवारी, सहायक शिक्षा निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0 लखनऊ।
- डॉ0 प्रदीप जायसवाल, प्रवक्ता (शोध), राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0 लखनऊ।
- डॉ0 वन्दना मिश्रा, प्रोग्राम स्टेट प्रोग्राम मैनेजर, केयर इण्डिया, उ0प्र0 लखनऊ।
- श्री मृणाल मिश्रा, सलाहकार केयर इण्डिया, उ0प्र0 लखनऊ।

ई-बुक डिजाईन: श्री आशुतोष आनन्द पूर्व माध्यमिक विद्यालय मियागंज बाराबंकी।

लेखन:

- सुश्री अल्पा निगम, प्राथमिक विद्यालय तिलौली सरदार नगर गोरखपुर।
- श्री राजेन्द्र कुमार राव प्राथमिक विद्यालय रहजनिया परदहा मऊ़।
- श्री अच्युत गोविन्द प्राथमिक विद्यालय खोराबर, गोरखपुर।

आडियो-सितारा ,अंजली

कवर पेज: -श्री गणेश चन्द्र डे - स्वतंत्र चित्रकार उ0प्र0 लखनऊ।

चित्रांकन एवं डिजाईन: सुश्री प्रतीक्षा चौहान, सलाहकार राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0 लखनऊ।

आभार: स्थानीय भाषा पर आधारित पाठ्य पुस्तक के विकास में आरम्भिक पठन कौशल के अन्तर्गत विकसित की गयी पी0एल0सी0-पलाश, नींव, छितिज के सदस्यों व संस्था केयर इण्डिया द्वारा विकसित की गयी सामग्री का भी संदर्भ लिया गया है। हम उन सभी के प्रति अपना आभार व्यक्त करते है।

इसके साथ ही इस पुस्तक के विकास में प्राथमिक विद्यालय तिलौली सरदार नगर गोरखपुर के बच्चों-पायल, अंजली, सितारा, खुशबू,प्रिया,धीरज, रिमझिम , जितेन्द्र, प्रीति,नीतेश और अभिभावकों में कौशल्या देवी, सुनीता देवी, बिन्दू देवी,ज्ञानी देवी द्वारा अमूल्य योगदान प्रदान किया गया।

इस्कूलवा में नमवां
लिखाई लिहल जा,
तोहॅ चला, हमहॅ
चलीं सबके
समझाई लिहल जा,
इस्कूलवा में नमवां
लिखाई लिहल जा।
सुना ए भइया सुना,
हमरी बतिया धियान
से तूँ सुना,
एक नवका इहवाँ
ना पइसा लगी,
फिरिए में तोहरा के
शिक्षा मिली।
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,
उत्तर प्रदेश, लखनऊ
डी.बी.टी.सी. कैंपस, निशातगंज,लखनऊ
0522-2780385, 0522-2780505
www.scertup.co.in
dscertup@gmail.com
dscertup
dscertup